महापुरुष

रघुवीरशरण मित्र

प्रथमावृत्ति
५४ वां कांग्रेस अधिवेशन
प्रकाशक
अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य
प्रकाशन परिषद
मेरठ

मूल्य १)

मुद्रक
पीयूष चन्द्र
सरस्वती प्रेस, मेरठ।

महापुरुष			पृष्ठ

महापुरुष

जय

राष्ट्र के परवानों की जय, देश के दीवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय।
राजश्री राष्ट्रभक्ति की जय, विजयिनी महाशक्ति की जय,
यही है कोटि कोटि की लय॥

तपस्वी महापुरुष हैं ये,
यशस्वी कलाकार हैं ये।
क्रान्ति की आग, शान्ति के जल,
जीत के दीप प्यार हैं ये॥

प्रजा के प्राण, प्रजा के धन,
देश की आन शान हैं ये।
श्रमिक के मन, कृषक के त्याग,
दान सम्मान ध्यान हैं ये॥

तिरंगे के त्यागों की जय, शहीदों के झण्डे की जय,
रक्त दे करो मुक्ति धन क्रय।
राष्ट्र के परवानों की जय, देश के दीवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥

देश पूजा, प्रीति के गीत,
विश्वभर के शिक्षक हैं ये।
ज्योति की रश्मि, मुक्ति के पथ,
दिवाली के दीपक हैं ये॥

शहीदों के मरघट के धन,
मातृ मन्दिर के मन हैं ये।
कफ़न तक खींच रहे हैं जो-
उन्हीं के लिये कफ़न हैं ये॥

मौत तक गई इन्हों से डर, काँपते दानव थर थर थर,
इन्हीं से अंग्रेज़ों को भय।
राष्ट्र के परवानों की जय, देश के दीवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥

तेज के रवि, शान्ति के चाँद,
डूबती नौका के नाविक।
देश-गौरव, राष्ट्र के फूल,
ग़रीबों के मन के मालिक॥

गुलामी के लिये विष अग्नि,
दुर्ग पर गड़े तिरंगे धन।
द्रौपदी के चीर से वीर-
राष्ट्र में करते परिवर्त्तन॥

गुलामी के हृदय को चीर, नीति का पार जाता तीर,
वीर की होती जय अक्षय।
राष्ट्र के परवानों की जय, देश के दीवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥
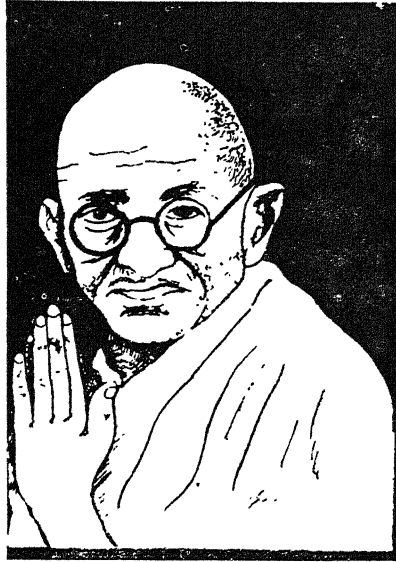
सन्त गांधी

सन्त ! सन्यासी ! भारत-भक्त ! राष्ट्र की चाह ! मुक्ति की राह !
विश्व की विजय ! दया की मूर्त्ति ! तुम्हें है दुनिया की परवाह ॥

छिपा खद्दर में निर्मल तन ,
छिपा खद्दर में जग का धन ,
छिपा खद्दर में चिर जीवन ,
छिपा खद्दर में माँ का मन ,

गरीबों के कण्ठों की आह ! अछूतों के कण्ठों की आह !
सन्त ! सन्यासी ! भारत–भक्त ! राष्ट्र की चाह ! मुक्ति की राह !
विश्व की विजय ! दया की मूर्ति ! तुम्हें है दुनिया की परवाह ॥

दूध बकरी का पीते हो,
फटे हृदयों को सीते हो,
तिरंगा झण्डा लिये खड़े,
हारते तुम से बड़े बड़े,

दृष्टि से खिल जाती है सृष्टि, शत्रु सब हो जाते हैं स्वाह।
सन्त! सन्यासी! भारत–भक्त! राष्ट्र की चाह! मुक्ति की राह!
विश्व की विजय! दया की मूर्ति! तुम्हें है दुनिया की परवाह॥

'करो या मरो' तुम्हारा घोष,
वीर तुम भारत माँ के कोष,
क्रान्ति में शान्ति, शान्ति में जीत,
प्रीति से भरे तुम्हारे गीत,

राम के भक्त! शान्ति के भूप! रोकते तुम दुनिया की दाह।
सन्त! सन्यासी! भारत–भक्त! राष्ट्र की चाह! मुक्ति की राह!
विश्व की विजय! दया की मूर्ति! तुम्हें है दुनिया की परवाह॥

कभी बन्दी, कभी अनशन,
कभी गो-सेवा में जीवन,
कभी चर्खे पर चलते तार,
कभी तकली से करते प्यार,

महात्मा गाँधी की जय हो, करो सब जंजीरों को स्वाह।
सन्त! सन्यासी! भारत-भक्त! राष्ट्र की चाह! मुक्ति की राह!
विश्व की विजय! दया की मूर्ति! तुम्हें है दुनिया की परवाह॥

देशमुकुट जवाहर

ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युञ्जय ! ओ शंखनाद ! ओ अङ्गारे !
ओ गिरते आँसू के सम्बल ! ओ सबकी आँखों के तारे !

जागृति के दीपक जगमग जग, जल रहे ज्योति से कण कण में।
कल्याणी वाणी आग लिये, अंगार उगलती क्षण क्षण में ॥
साकार क्रान्ति चिर शान्ति लिये - पूजा कर रही शहीदों की ।
जय वीर 'जवाहर' सेनानी ! जय हो तेरी उम्मीदों की ॥

तू सब की आँखों का तारा, सब तेरी आँखों के तारे।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युंजय ! ओ शंखनाद ! ओ अङ्गारे !

चालीस कोटि के सिंहनाद
तू शान तिरंगे झण्डे की।
झोपड़ियों के जलते दीपक !
तू आन तिरंगे झण्डे की॥
शोषक के खूनी ओठों को-
कम्पित कर देता तेरा स्वर।
अणु अणु से आग धधक उठती,
खुल जाते तेरे जिधर अधर॥

तू महा क्रान्ति ! तू महा शान्ति, परिवर्तन तेरे जय नारे।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युंजय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे !

तू लिये तिरंगा बढ़ा चला,
हत्यारे हारे सता सता।
तेरा घर हर मानव-मन में,
'कमलापति' ! तेरा यही पता॥
ओ राष्ट्रदूत ! ओ क्रान्तिदूत !
कवि की वाणी तेरी लय हो।
स्वातन्त्र्य दीप के परवाने !
तेरी जय हो, तेरी जय हो।

तेरी आँखों से छलक रहे, दुखियारी के आँसू खारे।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युंजय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे॥

मृत्युञ्जय सुभाष

'दो रक्त और लो आज़ादी', कह रहा बोस का श्वास श्वास ।
लो देखो शंखनाद करता, आया सुभाष, आया सुभाष ॥
सोने में तुल कर आया है, हीरों में तुल कर आया है ।
भारत–माता का राजमुकुट, गोरों से लड़ कर लाया है ॥
वह भूला है जो कहता है–अब बोस नहीं है दुनिया में ।
वह जीवन क्या जो कहता है–अब जोश नहीं है दुनिया में ॥
वह उसे दिखाई देता है, आज़ादी की है जिसे प्यास ।
'दो रक्त और लो आज़ादी' कह रहा बोस का श्वास श्वास ॥

'नेता जी' की जय जय करतीं-
आजाद हिन्द फौजें आईं।
दिल्ली के लाल किले में से-
हथकड़ियां आजादी लाईं॥

जय हिन्द घोष से जग छाया,
नेता जी की जय जय जय जय।
कह रहा 'जफर' कह रह गदर-
मेरे सुभाष की हुई विजय॥

उसने वह दीपक जला दिया, जिसमें आजादी का प्रकाश।
'दो रक्त और लो आजादी', कह रहा बोस का श्वास श्वास॥

लाखों आँखों के आगे ही-
आँखों से छिप जाया करता।
सौरभ से सृष्टि सफल होती-
जब फूल कहीं गाया करता॥

दर्शन को मरुथल में बैठे-
युग युग से थके पिपासे मृग।
नेता जी कहीं दीख जायें,
खिल जायें भारत माँ के दृग॥

वे तब तक दूर दृगों से हैं, जब तक है उनका देश दास।
'दो रक्त और लो आजादी', कह रहा बोस का श्वास श्वास॥

सरदार पटेल

भारत बल्लभ भाग्य सितारे !
इधर तुम्हारी वाणी हिलती, उधर काँप जाते हत्यारे ॥

सदा अमर वह प्रान्त तुम्हारा—
जिसमें 'नौ अगस्त' जीवित है।
सदा अमर वह क्रान्ति तुम्हारी—
जिस पर बुढ़िया माँ गर्वित है ॥

चले गये तुम जिधर उधर से—
विप्लव के अङ्गारे धधके।
निकल गये तुम जिधर उधर से—
क्रान्ति-दीप 'बिस्मिल' से भभके ॥

हिंसा के नंगे नर्त्तन पर — नाच रहे तेरे जय नारे।
भारत वल्लभ भाग्य सितारे!

तुम स्वतन्त्र सम्राज्ञी वल्लभ—
भाई हो इस सारे जग के।
धन्य! धन्य!! दीपक भारत के—
दिखा रहे काँटे पग पग के॥
तुम्हें तोड़नी हैं हथकड़ियाँ—
परिवर्त्तन अधिकार तुम्हारा।
तुम्हें दुर्ग पर लहराना है—
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा॥

तुम प्रलयंकर शंकर के दृग, सन् सत्तावन के अङ्गारे।
भारत वल्लभ भाग्य सितारे!

राष्ट्रीय सरकार बन गई,
बने राष्ट्र के निर्माता तुम।
तोड़ लिया अपने से नाता,
जोड़ रहे सब से नाता तुम॥
जब तुम सिंह गर्जना करते—
अंग्रेज़ी शासन हिल जाते।
वीर! तुम्हारी दया दृष्टि से—
मुरझाये मानस खिल जाते॥

ऊंचा माथा, चौड़ी छाती, मुक्ति मन्त्र उपदेश तुम्हारे।
भारत वल्लभ भाग्य सितारे!

मौलाना आज़ाद

जय जय मौलाना आज़ाद,
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद।

आज़ादी तेरा ईमान,
राष्ट्र—पताका तेरी शान।
तूने बहुत किये बलिदान,
तू भारत माँ का सम्मान।

स्वतन्त्रता तेरा जयनाद,
जय जय मौलाना आज़ाद,
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद।

हिला रहे शासन आज़ाद!
तोड़ रहे बन्धन आज़ाद।
मिला रहे दो मन आज़ाद,
तन मन धन जीवन आज़ाद।

तेरी अमर रहेगी याद,
जय जय मौलाना आज़ाद,
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद।

तू आज़ादी का इतिहास,
तू भारत का दिव्य प्रकाश।
तुझ में हिन्दुस्तानी रक्त,
तेरी बाट देखता तख़्त।

बूढ़े 'ज़फ़र' शाह की याद,
जय जय मौलाना आज़ाद,
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद।

बादशाह खान

तिरंगे झण्डे के सामन्त !
धन्य ! सरहद के गाँधी सन्त !

तुम्हारी बात बात में प्रीति,
शान्ति की नीति तुम्हारी रीति।
मिल रहे गले हो रही जीत,
गा रहे राष्ट्र—भक्ति के गीत।

कर रहे पारतन्त्रय का अन्त,
तिरंगे झण्डे के सामन्त !

पठानों के गाँधी प्रह्लाद !
तुम्हारी हृदय हृदय में याद ।
दृगों में मधु रस की बरसात,
सत्य शिव शान्ति तुम्हारी बात ।

कर रहे लूट फूट का अन्त,
तिरंगे झण्डे के सामन्त !

शान्त चित मातृ—भूमि के वीर !
तोड़ते जननी की जंजीर ।
बोलते जब तुम भारत वीर !
अहिंसा की खिंचती तस्वीर ।

तुम्हारी वाणी तन्त अनन्त,
तिरंगे झण्डे के सामन्त !

राजगोपाल आचार्य

कूटनीतिज्ञ राजगोपाल ! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षड्यन्त्र ।
टूटते अंग्रेजों के यन्त्र ॥

तुम्हारी दूरदर्शिता देख—
चकित है यह सारा संसार ।
तुम्हारा आत्म बुद्धि—बल देख,
काँप जाते हैं अत्याचार ॥

बरसती हैं वाणी से क्रान्ति,
बरसते आँखों से अंगार।
तुम्हारी ही सूझों से यहाँ–
बन गई भारतीय सरकार॥

फूंकते तुम संकुचित विचार, तुम्हें है विस्तृत जग से प्यार,
भेद से भरा तुम्हारा मन्त्र।
कूटनीतिज्ञ राजगोपाल! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षड्यन्त्र।
टूटते अंग्रेजों के यन्त्र॥

वीर! तुम बढ़े लक्ष्य की ओर,
रौंदते हुए मार्ग के शूल।
बीच में पड़ी हुई है नाव,
लगाने निकले उसको कूल॥

बताओ कोई ऐसा मार्ग,
न आये यहाँ गुलामी भूल।
राष्ट्र यह करना है स्वाधीन–
खिलाना है काँटों में फूल।

तिरंगे झण्डे का अभिमान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान,
नहीं रह सकता अब परतन्त्र।
कूटनीतिज्ञ राजगोपाल! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षड्यन्त्र।
टूटते अंग्रेजों के यन्त्र॥

विद्रोही जय प्रकाश

चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
तिरंगा झण्डा फहराने ॥

सन् बयालीस के क्रान्तिदूत,
भारत माँ के सच्चे सपूत,
आँखों में आग लिये निकले,
जय जय के राग लिये निकले।

चला खौलता खून आग पर पानी बरसाने,
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
तिरंगा झण्डा फहराने ॥

तुम गये जहाँ जय हुई वहाँ,
तुम अभी वहाँ तुम अभी यहाँ।
तुम सारे भारत की निधि हो,
तुम मातृभूमि की गति विधि हो।
जय जय जय जय जयप्रकाश! जय जलते परवाने!
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
तिरंगा झण्डा फहराने॥

तेजस्वी जलते सूर्य – चक्र!
जब दृष्टि तुम्हारी हुई वक्र–
अंग्रेज़ों के हिल गये हृदय,
क़ैदी भारत की हुई विजय।
जय जय जय भारत- प्रकाश! जय भारत दीवाने!
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
तिरंगा झण्डा फहराने॥

राष्ट्रपति कृपलानी

कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत।
शस्त्र यह गीत—

सीख लो आज़ादी का मन्त्र,
करो मिल भारतवर्ष स्वतन्त्र,
यही है प्रजातन्त्र का यन्त्र,
एक रस यत्र तत्र सर्वत्र,
बात में प्रीत।

कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत।
शस्त्र यह गीत॥

कलाओं का सम्बल लो साथ,
आँसुओं की छल छल लो साथ,
किसानों के श्रमकण लो साथ,
ताज वह तख्त तुम्हारे हाथ।

तुम्हारी जीत।
कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत।
शस्त्र यह गीत॥

आसफ़ अली

तेरे भावों की रेखायें- बुझते दीप जला जाती हैं।
तेरे जीवन की घटनायें- उलझे धागे सुलझाती हैं॥

बढ़े तुम्हारे क़दम चल पड़ी- आज़ादी झण्डा लहराती।
चली तुम्हारी अन्तर-ज्वाला क्रान्ति क्रान्ति के गीत सुनाती॥
तेरी जीवन-ज्योति पथिक को भूली मंज़िल दिखलाती है।
तेरी मुख-मुद्रा शासन की गहरी नीव हिला जाती है॥

तेरी आँखें महा क्रान्ति के भीषण शोले सुलगाती हैं।
तेरे भावों की रेखायें- बुझते दीप जला जाती हैं॥

भेद – भाव से दूर दूर रह-
देश–प्रेम के भाव जगाते ।
पास बुलाते आजादी को,
अंग्रेजों को दूर भगाते ॥

गाते गीत एक हो जाओ ,
छोड़ो फूट, तोड़ दो बन्धन ।
चीख चीख कर सुना रहे हो -
बहरों को बुढ़िया का क्रन्दन ॥

कस कर पड़ी हुई पैरों मे- माँ की जजीरें गाती है ।
तेरे भावों की रेखायें- बुझते दीप जला जाती है ॥

यह परवाना मातृभूमि के -
लिये प्राण देने आया है ।
यह सपूत जननी के आँसू -
आँचल में भर कर लाया है ॥

यह दीवाना आजादी का -
झण्डा लहराने आया है ।
यह विद्रोही युग – परिवर्त्तक !
जग में इन्कलाब लाया है ।

आसफअली अरुण की किरणें - पथ के गड्ढे दिखलाती है ।
तेरे भावों की रेखायें- बुझते दीप जला जाती है ॥

महामना मालवीय

सरस्वती मन्दिर के तन मन ! मानवता के जीवन-धन !
भारतीय संस्कृति की वाणी, करती तेरा अभिनन्दन ॥

तीर्थ बनारस की चोटी से, बरस रहा है तेरा स्वर।
तेरी पूजा का प्रसाद है, 'काशी' का अक्षर अक्षर ॥
तेरी सेवाओं का फल है, मातृभूमि का शिक्षित नर।
बदल गया तेरे त्यागों से, भारत का पत्थर पत्थर ॥

स्वतन्त्रता के अमर पुजारी ! करते रहते दमन दमन।
सरस्वती मन्दिर के तन मन ! मानवता के जीवन-धन !

गये विलायत' लेकिन माँ के-
चरणों की मिट्टी ले कर।
गये कहीं भी मगर न छोड़ी-
मातृभूमि की मुक्ति – डगर॥

गोता मार ढूंढने निकले-
भारत की श्री सागर में।
भर भर पिला रहे भारत को-
वाणी का रस गागर में।

राष्ट्र-वृद्धि में, जन-सेवा में, लगा हुआ तेरा जीवन।
सरस्वती मन्दिर के तन मन! मानवता के जीवन-धन!

तेरे जीवन के प्रकाश में-
देख रहे हैं खोई निधि।
तेरी कठिन तपस्याओं से-
देता जग को विद्या विधि॥

तेरी महावीर सेवा से-
सफल हुए अगणित उत्सव।
जय जय जय जय युग-परिवर्त्तक!
जय जय जय भारत-गौरव!

मुक्ति-गीत बन जाया करते, मुंह से निकले हुए वचन।
सरस्वती मन्दिर के तन मन! मानवता के जीवन-धन!

कर्मवीर राजेन्द्र

जय जय राजेन्द्र प्रसाद ! तुम्हारी जय हो ।
तुम मातृभूमि की जय हो, विश्व-विजय हो ॥

तुम शिक्षक, रक्षक, अजय, अमर परिवर्त्तक,
तुम अग्रदूत, आविष्कर्त्ता, जग-रंजक,
तुम जय-ध्वनि करते चले तोड़ने बन्धन,
तुम करने निकले दुनिया में परिवर्त्तन,

तुम स्वतन्त्रता पाने के दृढ़ निश्चय हो ।
जय जय राजेन्द्र प्रसाद ! तुम्हारी जय हो ॥

तुम मूर्त्तिमान सभ्यता, अमर वाणी हो,
रण-वीर ! तुम्हारी कम्पन कल्याणी हो,
तुम थके हुए मज़दूर-हृदय की ध्वनि हो,
तुम दुखी हृदय का सदय निलय की ध्वनि हो,
भारत माँ पहिने मुकुट अमर यह लय हो।
जय जय राजेन्द्र प्रसाद ! तुम्हारी जय हो ॥

राजा महेन्द्र प्रताप

निर्वासित ! तेरा अभिनन्दन ।
चल दिये कमर कस बाँध कफ़न ॥

भारत आज़ाद कराने को ,
आपस की फूट मिटाने को ,
कण कण में फूका अमर मन्त्र ,
कारा से करने को स्वतन्त्र ,

जय धन्य धन्य भारत के धन !
निर्वासित ! तेरा अभिनन्दन ॥

'बर्लिन' में फूका कभी मन्त्र,
कर दिये करोड़ों मन स्वतन्त्र,
तुम प्रजा तन्त्र, षड्यन्त्र मन्त्र,
तुम मूर्त्तिमान भारत स्वतन्त्र,

कानों में निर्धन का क्रन्दन।
निर्वासित! तेरा अभिनन्दन॥

ज़िन्दगी देश के अर्पण की,
सारी सम्पदा समर्पण की,
सारी ज़िन्दगी तपस्या की,
तब हल यह कठिन समस्या की,

कर दिया राष्ट्र में परिवर्त्तन।
निर्वासित! तेरा अभिनन्दन॥

पट्टाभि सीता रामैया

शान्त स्वभाव ! दीप भारत के ! स्वतन्त्रता के गौरव गीत !
खद्दर की धोती चादर से- झाँक रही है जग की जीत ॥

अश्रु बहाती हुई कलम यह- कैसे चित्रित करे चरित्र ।
बस इतना ही लिख सकती है- भावुक ! तुम दुनिया के मित्र ॥
दुखी दृगों से झाँक रही है- भारत माता की तस्वीर ।
कर्मवीर की करुण कहानी- शक्ति द्रौपदी का चिर चीर ॥

ये उनके इतिहास जिन्हों की- रण में गई जिन्दगी बीत ।
शान्त स्वभाव ! दीप भारत के ! स्वतन्त्रता के गौरव गीत !

गीत भरे गम्भीर दृगों में-
छाया रहता मधुर प्रभात।
गाँधी के अनुयायी तुम हो,
कुमुदनियों की दीपित रात॥
नभ का पर्दा चीर, पथिक! तुम-
लेकर निकले दिव्य प्रकाश।
राम-राज्य को साथ ढूंढता-
दीपों से सज्जित आकाश॥

त्याग चुके सुख दुख की दुनिया, खोज रहे भारत की जीत।
शान्त स्वभाव! दीप भारत के! स्वतन्त्रता के गौरव गीत!

विजय लक्ष्मी

विजय ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने ।
बढ़ चली करने या मरने ॥

फूंक दी अमेरिका में आग,
जगाये भारत माँ के भाग ।
गा रही विजय रागिनी राग,
जाग ओ भारत अब तो जाग ॥

मृत्युंजयि चल पड़ी जवानी मुर्दों में भरने ।
विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने ।
बढ़ चली करने या मरने ॥

चल पड़ी राष्ट्र- मुकुट की बहन,
दिखाने फिर मे लंका दहन ,
तोड़ने बन्धन की जंजीर ,
जोड़ने भारत की तक़दीर ,
विजय-ध्वजा चल पड़ी, ताज भारत के सर धरने ।
विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने ।
बढ़ चली करने या मरने ॥

सरोजनी नायडू

क्रान्ति की जलती चिनगारी, जहर में भीगी हुई कटार—
अटल अभिमान राष्ट्र की शान ।
आग में तपे स्वर्ण की चमक,
चमकती तलवारों की दमक,
थकी भावुकता की छाया,
किसानों दीनों की माया,
ध्वजा की शक्ति ! ध्वजा की आन !
क्रान्ति की जलती चिनगारी, जहर में भीगी हुई कटार—
अटल अभिमान राष्ट्र की शान ॥

डूबती नौका की पतवार,
रुद्र दृग भस्मसात् अंङ्गार,
विजयनी भारत नारी एक-
कर रही दुनिया का अभिषेक,
कर रही प्राणों का बलिदान !
क्रान्ति की जलती चिनगारी, जहर में भीगी हुई कटार-
अटल अभिमान, राष्ट्र की शान ॥

कुमुदनी यह खिलती दिन रात,
विश्व – वाणी नारी की बात ,
बन्दनी आँखों की बरसात ,
साथ अम्बर के तारे सात ,
देश की जान, देश की आन ।
क्रान्ति की जलती चिनगारी, जहर में भीगी हुई कटार-
अटल अभिमान राष्ट्र की शान ॥

रण लक्ष्मी

झाँसी की रानी रण-लक्ष्मी, आजादी लेने निकल पड़ी।
चल पड़ीं वीर नारियाँ साथ, मैदानों में हो गईं खड़ी॥
भर भर पिस्तौलें गर्ज उठीं, सब अंगारों सी लाल लाल।
प्रलयंकर शंकर के दृग में, मानों सहसा आये उबाल॥
अपनी स्वतन्त्रता लेने को, शोणित की पिचकारियाँ चलीं।
दुश्मन की चिता जलाने को, मरघट की तैयारियाँ चलीं॥
हिल गईं राज्य की मीनारें, डर गईं कृपाणें बड़ी बड़ी।
झाँसी की रानी रण-लक्ष्मी, आजादी लेने निकल पड़ी॥

वह देश गुलाम रहे कैसे,
जिसकी देवियाँ भवानी हों।
दो रक्त और लो आजादी,
जिनकी ये अमर जवानी हो॥

झाँसी की रानी सेनानी–
कहती जय हिन्द बढ़ी आगे।
वह लिये तिरंगा चढ़ी उधर,
भारत के भाग्य इधर जागे॥

अंग्रेजी सेना शक्ति देख, डर कर झुक कर हो गई खड़ी।
झाँसी की रानी रण-लक्ष्मी, आजादी लेने निकल पड़ी॥

क़सम

गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा,
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की क़सम तुमको ॥

क्रुद्ध रण–चण्डिका गर्जे,
वीर जय बोलते निकले।
भैरवी तान छिड़ जाये,
ईंट से ईंट भिड़ जाये।

जवानी की क़सम तुमको–
गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा,
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की क़सम तुमको ॥

चलो हिन्दू ! मुसलमानों !
खड्ग खप्पर लिये निकलो।
क़सम ईमान की तुमको,
क़सम भगवान् की तुमको।

क़सम वेदों कुरानों की—
गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा,
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की कसम तुमको ॥

राष्ट्र के प्राण ! राष्ट्र के धन !
चलो तुम तोड़ने बन्धन।
पुकारा है तुम्हें माँ ने,
चलो तुम गोलियाँ खाने।

तिरंगे की क़सम तुमको—
गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा,
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की क़सम तुम को ॥

उठो अब रक्त से खेलो,
चलो सब मौत से लड़ने।
बढ़ो आगे, बढ़ो आगे,
चलो दिल्ली, चलो दिल्ली।

क़सम है चन्द्र शेखर की—
गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा,
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की क़सम तुमको॥

जियो मत जेल में सड़ सड़,
मरो मत भूख से रो रो।
उठो बँगाल के भूखों!
तड़प कर छीन लो सत्ता।

क़सम भूखे किसानों की—
गुलामी छोड़ कर निकलो, बेड़ियाँ तोड़ कर निकलो,
दिवारें फोड़ कर निकलो,
क़िले पर गाड़ दो झण्डा।
शिखर पर गाड़ दो झण्डा,
शहीदों की क़सम तुमको॥